मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022
आलेख प्राप्ति : 10-10-2022
स्वीकरण : 15-10-2022

असिंचित क्षेत्रों में कठिया गेहूं के खेती की संभावनाएं

अंशुमान सिंह, आशुतोष शर्मा, अभिषेक कुमार एवं आशुतोष सिंह
रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश–284003
ई–मेल – asinghrajkumar@gmail.com

सारांश :

कठिया गेहूं मध्य–भारत में उगाई जाने वाली गेहूं की पौष्टिक किस्म है। कठिया गेहूं का उत्पादन कम उर्वरक एवं कम देख–रेख में किया जाता है। कठिया गेहूं में सामान्य गेहूं की किष्मों की तुलना में अधिक पोषक तत्व एवं जैव–रसायनिक यौगिक पाए जाते हैं, जो कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए गुणकारी होते है। कठिया गेहूं में सामान्य गेहूं की तुलना में अधिक प्रोटीन और बीटा–कैरोटीन की मात्रा पायी जाती है। इसके अलावां कठिया गेहूं में विटामिन–ई, विटामिन बी 6, सीलियम और रेशे प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। यदि खनिज तत्वों की बात करें तो कठिया गेहूं के दाने मैंगनीज, फास्फोरस, तांबा और फोलेट भी भरपूर मात्रा में पाए जाते है। इन सब पोषक तत्वों की प्रचुरता के कारण कठिया गेहूं सामान्य गेहूं के किस्मों की तुलना में अधिक पौष्टिक होता है। कठिया गेहूं को भोजन में शामिल करने से स्वास्थ्य को काफी हद तक ठीक रखा जा सकता है।

1. परिचय :

भारत में कठिया गेहूं की खेती बहुत पहले से होती चली आ रही है। वर्तमान में भारत में कठिया गेहूं की खेती 25 लाख हेक्टेयर से भी अधिक क्षेत्रफल में की जा रही है। भारत में कठिया गेहूं की खेती का प्रचलन सबसे पहले उत्तर पश्चिम के राज्यों के साथ–साथ पंजाब में की जाती थी। बाद में दक्षिण भारत के कर्नाटक एवं गुजरात में कठिया गेहूं की खेती का प्रचलन शुरू हुआ। वर्तमान में कठिया गेहूं की खेती राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में की जा रही है। कठिया गेहूं की खेती के सफलता का मुख्य कारण यह है कि कठिया गेहूं में रोग एवं बीमारियों के लगने की संभावनाएं बहुत कम होती है तथा इसकी खेती में कम सिंचाई एवं उर्वरकों की आवश्यकता होती है। कठिया गेहूं सामान्य गेहूं के किस्मों की तुलना में जल्दी पककर तैयार हो जाती है। कठिया गेहूं की खेती सिंचित व असिंचित दोनों दशाओं में की जा सकती है। सामान्य गेहूं की प्रजातियों की तुलना में कठिया गेहूं की किस्में सूखा एवं अजैविक कारकों के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं। सिंचित दशा में कठिया गेहूं की खेती से लगभग 50 से 55 कुंतल एवं असिंचित दशा में 30 से 35 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त किया जा सकता है।

2. सिंचित क्षेत्रों के लिए कठिया गेहूं की प्रजातियां :

ऐसे क्षेत्र जहां पर सिंचाई के लिए पानी की प्रचुर मात्रा उपलब्ध हो या सिंचाई के समुचित साधन हो, वहां के लिए कठिया गेहूं की प्रजातियां विकसित की गई है। इन प्रजातियों में से एम.पी.1215, जी.डब्लू. 273, पी.डी.डब्लू. 34, पी.डी.डब्लू. 215, पी.डी.डब्लू. 233, राज 1555, एवं एच.आई. 8498 प्रमुख है।

3. असिंचित क्षेत्रों के लिए कठिया गेहूं की प्रजातियां :

भारतवर्ष के ऐसे भू–भाग जहां पर सिंचाई के समुचित साधन उपलब्ध नहीं है, कठिया गेहूं की खेती की जा सकती है। असिंचित क्षेत्रों में सुजाता, एच.डी. 4672, एच.आई. 1827, जी.डब्लू. 2 एवं मेघदूत जैसी प्रजातियों की खेती की जा सकती है।

4. कठिया गेहूं की प्रमुख किस्में :

सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए कठिया गेहूं की अलग–अलग प्रजातियां विकसित की गई है जिनका विवरण निम्नवत है:–

4.1. एच.डी–4728: इस प्रजाति को पूरा मालाव के नाम से भी जाना जाता है ।इस प्रजाति के दाने सुडौल आकार के होते हैं। कठिया गेहूं की यह प्रजाति 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत उपज 5.42 से 6.28 टन प्रति हेक्टेयर होती है। यह प्रजाति गेरुआ रोग के प्रति प्रतिरोधी होती है।

4.2. एच.आई–8498: कठिया गेहूं के इस किस्म की खेती बुंदेलखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में की जाती है। इस प्रजाति को पूसा अनमोल के नाम से जाना जाता है। यह प्रजाति सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। इस प्रजाति में बीटा–कैरोटीन नाम के साथ–साथ जिंक व आयरन की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। यह प्रजाति पककर तैयार होने में 135 से 40 दिन का समय ले लेती है। इसकी खेती से एक हेक्टेयर में 40 से 45 कुंतल उपज प्राप्त किया जा सकता है।

4.3. एच.आई–8381: इसे मालवश्री के नाम से जाना जाता है। कठिया गेहूं की यह किस्म देर से बुआई के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इस किस्म की औसत उपर क्षमता 40 से 42 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।

4.4. एम.पी.ओ–1215: कठिया गेहूं की यह प्रजाति सिंचित दशा में समय से बुवाई के लिए उपयुक्त मानी जाती है। अन्य किस्मों की तुलना में यह किस्म बहुत ही अगेती होती है, जो कि 113 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

4.5. एच.वाई–8627: कठिया गेहूं की यह प्रजाति असिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होती है। इसे मालवाकीर्ति के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रजाति की औसत उपज क्षमता 26 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।

4.6. एच.आई–8713: यह किस्म पूसा मंगल के नाम से प्रचलित है। इस प्रजाति की खेती मध्य भारत में की जाती है। इस प्रजाति में बीटा–कैरोटीन एवं प्रोटीन की उच्च मात्रा पाई जाती है।

4.7. एच.आई–8663: अन्य किस्मों की तुलना में इस प्रजाति की उत्पादन क्षमता अधिक होती है। इसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लिए वरदान माना जाता है। इसकी खेती मध्य प्रदेश में ज्यादा भू–भाग में की जाती है। इस प्रजाति में बीटा–कैरोटीन एवं प्रोटीन की उच्च मात्रा पाई जाती है।

4.8. पी.डी.डब्ल्यू–291: यह किस्म अगेती होती है। समय से बुआई के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती दिल्ली से सटे राज्यों जैसे–पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में की जाती है। यह किस्म गेरुआ, करनाल बंट व कांड रोग के प्रति प्रतिरोधी होती है। इस प्रजाति की खेती से एक हेक्टेयर में 48 कुंटल उपज प्राप्त किया जा सकता है।

5. बुवाई का समय :

असिंचित क्षेत्र या वर्षा पर आधारित क्षेत्रों में कठिया गेहूं की खेती अगेती करनी चाहिए। ध्यान रहे की बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी। बुवाई के समय यदि खेत में पर्याप्त नमी नहीं है तो बीज के जमाव में दिक्कत आती है। चाहिए सिंचित दशा में कठिया गेहूं की बुवाई 25 अक्टूबर से 5 नवंबर के अंदर कर देना

चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में अगेती बुवाई कर देने से फसल समय से पककर तैयार हो जाती है एवं सूखा के प्रभाव से फसल को बचाया जा सकता है ।सिंचित दशा में ऐसे क्षेत्र जहां पर सिंचाई के साधन उपलब्ध हो कठिया गेहूं की बुवाई 15 नवंबर से 30 नवंबर तक कर सकते हैं।

6. खाद एवं उर्वरक की मात्रा :

सामान्य गेहूं के प्रजातियों की तुलना में कटिया गेहूं में खाद एवं उर्वरक की कम से कम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से कटिया गेहूं में पाए जाने वाले पौष्टिक तत्वों की गुणवत्ता बनी रहती है। सिंचित दशा में कठिया गेहूं के फसल उत्पादन हेतु 120 किलो नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस एवं 30 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। ध्यान रहे कि नाइट्रोजन की आधी मात्रा यानी 60 किलो खेत की जुताई के समय एवं आधी बची मात्रा को खड़ी फसल में डालना चाहिए। असिंचित दशा में जहां सिंचाई के लिए जल प्रबंध नहीं होता, वहां पर 60 किलो नाइट्रोजन 30 किलो फास्फोरस एवं 15 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। सिंचित दशा या ऐसे क्षेत्र जहां पर सिंचाई की थोड़ी बहुत व्यवस्था हो वहां पर 80 किलो नाइट्रोजन, 40 किलो फास्फोरस एवं 20 किलो पोटाश एक हेक्टेयर फसल उत्पादन के लिए पर्याप्त होता है।

7. बीज की मात्रा एवं बीज उपचार :

एक एकड़ में कटिया गेहूं की खेती के लिए 40 किलो बीज की मात्रा पर्याप्त होती है । बीज की बुवाई से पहले 2 ग्राम बीटावैक्स प्रति किलो बीज की दर या 2 ग्राम बावस्टीन प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बुवाई से पहले बीज उपचार से फसल में फफूंद जनित या अन्य रोग लगने की संभावनाएं कम रहती है।

8. फसल प्रबंधन :

गेहूं की सामान्य किस्म की तुलना में कटिया गेहूं की किस्मों को बहुत ज्यादा देख–रेख करने की जरूरत नहीं होती है। कठिया गेहूं में खरपतवार नियंत्रण की भी बहुत ज्यादा आवश्यकता नहीं होती है। कभी–कभी हिरनखुरी या बथुआ जैसे खरपतवार देखने को मिलते हैं, जिसे निराई गुड़ाई करके नियंत्रित किया जा सकता है। यदि खड़ी फसल में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार देखने को मिलते हैं तो उनके नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी जैसे पेंडीमैथलीन 3:30 ईसी की मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के एक सप्ताह के अंदर छिड़काव करना चाहिए, ऐसा करने से खरपतवार पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

9. कठिया गेहूं में पाए जाने वाले पोषक तत्व :

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कटिया गेहूं की मांग सामान्य गेहूं की तुलना में बहुत ज्यादा है, ऐसा इसलिए है कि सामान्य गेहूं की तुलना में कटिया गेहूं में अधिक पोषक तत्व पाया जाता है। कटिया गेहूं में लगभग 12 से 14 % प्रोटीन तथा बीटा–कैरोटीन जोकि विटामिन–ए का प्रमुख स्रोत माना जाता है। साधारण गेहूं में प्रोटीन न के बराबर पाई जाती है। कठिया गेहूं के खाने से बहुत फायदे होते हैं, इसे खाने से कई बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। कठिया गेहूं से कई प्रकार के व्यंजन बनाये जाते है जोकि खनिज एवं पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं। इसका उपयोग बिस्किट, सूजी, दलिया, उपमा आदि बनाने में भी किया जाता है।

****